रात्रिक्लास 15/6/68 ओमशान्ति सृष्टि चक्र याद है?

शिवबाबा शिवबाबा तो सभी कहते हैं। यहाँ बाप बैठे हैं। समझते हैं हमको शिवबाबा पढ़ा रहे हैं। पढ़ाई में, याद की यात्रा भी आ जाती है; इसलिए सेकेण्ड में जीवनमुक्ति गाया हुआ है। जीवनमुक्ति तो मिलनी ही है। पुरुषार्थ कर ऊँच पद पाना है। बच्चे यह तो जानते हैं हम अपनी बादशाही तन–मन–धन से स्थापन कर रहे हैं। तन भी जरूर चाहिए। आत्मा में मन, बुद्धि है ही और धन। धन इतना काम नहीं देगा हाँ चित्र आदि बनाते हैं। शिवबाबा तो दाता है। वह क्या करेंगे? कर्तव्य कराते हैं ऐसे2 सेन्टर खोलो। खूब पुरुषार्थ करना है। इतना पुरुषार्थ और कोई मुनष्य नहीं करता। तुम जितना करते हो। जानते हो हम आदि सनातन दैवी–देवता धर्म की सैपलिंग लगा रहे हैं। देवता धर्म कोई है नहीं। सिर्फ चित्र है। शास्त्र है; परन्तु उनको पता नहीं है गीता आदि सनातन दैवी–देवता धर्म का शास्त्र है। तुच्छ बुद्धि हो गये हैं; इसलिए भारत के लिए कहा जाता है पत्थर बुद्धि और पारस बुद्धि। तो बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। बाबा आये हुए हैं जो बैठ हमको पढ़ाते हैं। तो कितना ऐसे टीचर को याद करना चाहिए। जो अच्छा इम्तहान आदि पास करते हैं तो टीचर को सौगात आदि देते हैं। वह है लौकिक यह है पारलौकिक। तो टीचर को तो बहुत याद करना चाहिए। बहुत ही अन्दर में खुशी होनी चाहिए। बाप हमको ऐसा बना रहे हैं। अभी बच्चे जानते हैं। वह गीता पढ़ते हैं; परन्तु दिल से बात लगती नहीं। अभी तुमको दिल से लगती है। बाबा हमको पढ़ाते हैं यह याद रहे तो भी खुशी का पारा न रहे। जानते हो शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं। ब्रह्मा भी पढ़ रहे हैं। जिसके हम एडॉप्टेड चिल्ड्रेन्स हैं। भगवान पढ़ाते हैं यह याद करो तो यह भी मनमनाभव का काम दे सकते हैं। बाबा पढ़ाते हैं तो याद किया ना। इससे भी विकर्म विनाश होंगे। यह अन्तिम जन्म है बाबा आये हैं साथ में घर ले जावेंगे। और कोई समझा न सकेंगे बाबा अपने परमधाम–शान्तिधाम ले जावेंगे नई बात थोड़े ही है। बाबा पढ़ाते हैं फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपने राजधानी में राज्य पा लेंगे। पढ़ाई से ही हम नई दुनिया के मालिक बनते हैं। यह तो जो बाबा समझाते हैं यह भी भूल जाते हैं। यह याद रहे तो भी सतोप्रधान बन जायें। याद से ही सतोप्रधान बनेंगे। यह चिन्तन रहे। बाप कहते हैं भल धंधा आदि भी करो नहीं तो शरीर निर्वाह कैसे चलेगा। समझो बाबा भगवान हमको पढ़ाते हैं तो यह भी याद हुई ना। बाबा 84 का चक्र समझाते हैं। टीचर को भी समझाओ मनुष्य से देवता बनना माना कैरेक्टर्स सुधारना है। बाप आये हैं उनको याद करो। दैवी गुण धारण करो। आजकल सबसे लड़ाई–झगड़ा स्टूडेन्ट्स का है। जिसको ही न्यु वल्ड समझते हैं। एक की भूल सारी दुनिया में। भारत की ही भूल है। अविनाशी खण्ड भी भारत ही है ना। तो भारतवासियों की ही भूल है; परन्तु यह अपन को अकलमन्द समझते हैं। पहले2 बाप का परिचय देने से फिर कुछ पूछेंगे नहीं। हम श्रीमत की बात करते हैं। तुम मनुष्य मत पर बात करते हो। हम मनुष्य मत पर तो जन्म–जन्मान्तर चले हैं। भगवान तो टीचर ठहरा ना। बाप पढ़ाते हैं नई दुनिया के लिए तो विनाश भी जरूर होगा ना। यह है ही तमोप्रधान दुनिया। बहुत प्यार से समझाना है। बाबा ऐसे ही कहते हैं। जो बाप, टीचर, गुरु भी है। महिमा में ही तुम किसको पानी कर देंगे। बाप कहते हैं सतोप्रधान बनना है तो बाप को याद करो। तो आत्मा शान्त रहेगी। बाप नज़र से निहाल करते हैं। अशरीरी भव। आत्माभिमानी बन हमको याद करो। पुरानी सृष्टि का विनाश होना ही है। सारी तैयारी हैं विनाश के लिए। ड्रामा अनुसार तुम्हारी देरी है। जो याद में नहीं रह सकते हो। कर्मातीत अवस्था न हुए हैं। पैगाम सभी को नहीं पहुँचाया है। तुम वर्ल्ड मैसेन्जर हो। गाते हैं ना अहो प्रभु तेरी लीला। बाप आया इतना दिन पढ़ाया।..... फिर देरी हो जाती है। बहुत हंगामा, दरबदर हो पड़ते हैं। बोलो, हम श्रीमत पर विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हैं। स्वर्ग में अशान्ति होती ही नहीं। श्रीमत है। तुम जो सवाल पूछते हो मनुष्य मत पर। हमको ईश्वरीय (मत) मिलती है। मनुष्यमत का कुछ सुनो ही नहीं। दैवी मत के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। दैवी मत पर तो तुम ....। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।